सही और निश्चित सत्य को मापने के लिए कोई व्यवहारिक रीति नहीं निकल पाई है। इसीलिए, शुम्पीटर (Schumpter) के अनुसार,

From a pratical stand point we are not much better off when drawing purely imageneary in difference curve than we are when speaking of purelly imegeneary utility functions.

(8) Hicks द्वारा प्रस्तुत घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर की भी आलोचना की गई है। प्रो० हिक्स का विचार है कि घटती हुई सीमांत प्रतिस्थापन दर सिद्धांत, घटती हुई सीमांत उपयोगिता सिद्धांत का केवल रूपान्तरण मात्र नहीं है, बल्कि उपभोक्ता माँग सिद्धांत में एक ठोस परिवर्तन है। लेकिन आर्म स्ट्राँग का कहना है, कि प्रो० हिक्स घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर को प्रतिपादन उपयोगिता की धारणा से सर्वथा स्वतंत्र रूप में करने में समर्थ नहीं हुए है। केवल शब्दावली में परिवर्तन करके उपयोगिता की धारणा को पृष्ठ भूमि में डाल दिया है। जैसे- यदि उपभोक्ता x वस्तु का y द्वारा प्रतिस्थापन करता है तो y की अतिरिक्त इकाई के लिए, x की सीमांत प्रतिस्थापन दर कम होती जाएगी क्योंकि y की मात्रा में वृद्धि होने से इसकी सीमांत उपयोगिता कम होती जाएगी। अतः उपयोगिता का यहाँ भी छोड़ा नहीं गया।

(9) इस विश्लेषण में भी कोई आधारभूत नवीनता नहीं है। इसलिए ऐसा कहा गया है, कि पुरानी शराब को ही नयी बोतलों में भर दी गई है। जैसे- गणनवाचक संख्या 1, 2, 3 के बदले

(5) जोखिम या प्रत्याशा की अनिश्चितता के उपस्थित होने पर यह विश्लेषण उपभोक्ता के व्यवहार की व्याख्या नहीं कर सकता। प्रो० न्यू मैन तथा मोर्गेन्सटर्न और आर्म स्ट्रांग के अनुसार क्रमवाचक उपयोगिता पर आधारित तटस्थता का विश्लेषण टूट जाता है, जैसे ही हम चुनावों के परिणामों के सम्बन्ध में प्रत्याशा की अनिश्चितता को शामिल कर लेते हैं। उदाहरण के लिए मान लिया जाए कि एक उपभोक्ता के सामने A, B और C तीन विकल्प हैं। पर A को B के स्थान पर और C को A के स्थान पर पसन्द करता है। A के प्राप्त होने की सम्भावना निश्चित है जबकि B और C के प्राप्त होने की सम्भावना आधी-आधी है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ता का चुनाव पसन्द की तीव्रता के तुलनात्मक अनुपातों द्वारा निर्धारित होगा और ऐसा होने पर अप्रत्यक्ष रूप से गणनवाचक उपयोगिता को स्वीकार कर ली जाएगी।

(6) आर्म स्ट्रांग के अनुसार इस विश्लेषण का एक दोष तटस्थता के वक्र से सम्बन्धित है। इनके अनुसार अधिकांश दशाओं में उपभोक्ता विभिन्न विकल्पों के बीच इसलिए उदासीन नहीं रहता कि वह इनके अन्तर को जानता है बल्कि इसलिए उदासीन रहता है कि वह वैकल्पिक संयोगों की उपयोगिताओं के अन्तर से अनभिज्ञ रहता है। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता उपयोगिता के अन्तर का मूल्यांकन करने अथवा अनुमान लगाने में समर्थ नहीं होगा।

(7) तटस्थता वक्र विश्लेषण का प्रयोग व्यवहारिक अनुसंधान में नहीं किया जा सकता, क्योंकि तटस्थता रेखाएं काल्पनिक होती हैं इनकी

(4) दोनों ही विश्लेषणों में मनोवैज्ञानिक तरीकों को अपनाया गया है। मनोवैज्ञानिक तरीके में हम अपने मस्तिष्क में प्रतिक्रिया के आधार पर उपभोक्ताओं की मनोवैज्ञानिक भावनाओं की कल्पना कर लेते हैं। प्रो० तपस मौजूमदार के अनुसार हिक्स, एलेन की मूल विधि वही है, जो मार्शल की सीमांत उपभोगिता ह्रास की कल्पना में है, कहना चाहिए कि यह मुख्यतः मनोवैज्ञानिक है।

तटस्थता वक्र विश्लेषण भी दोषों से बिल्कुल मुक्त नहीं है। अनेक अर्थशास्त्रीयों द्वारा निम्न कारणों से इसकी आलोचना की गई है। पहली बात तो यह है कि यह विश्लेषण भी कुछ अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है। जैसे - (A) उपभोक्ता की विवेकशीलता जो हर व्यक्ति के लिए सही नहीं है। इसके अतिरिक्त एक उपभोक्ता खर्च करते समय रीति-रीवाज, सामाजिक और धार्मिक परम्पराओं इत्यादि से भी शासित होता है।

(B) इस विश्लेषण के अनुसार एक उपभोक्ता को अपने अनुराग क्रमों का ज्ञान होता है लेकिन प्रो० बोल्डिंग का कहना है कि हम कुछ निश्चित स्थितियों में चुनाव कर सकते हैं, परन्तु स्थितियों की बहुत अधिक संख्याओं के बीच चुनाव करना सम्भव नहीं है।

(C) वस्तु के प्रमाणित होने की मान्यता भी हर स्थिति के लिए सही नहीं है।

(D) यह विश्लेषण भी पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता पर आधारित है जो व्यवहारिक जीवन में शायद ही पायी जाती है।

V.V.I
*

Q.4

Ques. → तटस्थता वक्र विश्लेषण का आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करें।

अथवा,

उपयोगिता विश्लेषण और तटस्थता वक्र विश्लेषण में तुलना करें। तटस्थता वक्र विश्लेषण उपयोगिता विश्लेषण से कहाँ तक श्रेष्ठ है।

Ans. → तटस्थता वक्र विश्लेषण का प्रारम्भ उपयोगिता विश्लेषण के दोषों के कारण किया गया। यद्यपि ये दोनों विश्लेषण एक-दूसरे से भिन्न हैं, लेकिन दोनों में कुछ समानतायें भी पायी जाती है ये समानतायें इस प्रकार हैं-

(1) दोनों ही विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित है कि उपभोक्ता विवेकशील होता है। जिसका अर्थ है कि दी हुई स्थितियों के अन्तर्गत वह अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना चाहता है।

(2) उपभोक्ता संतुलन की दशा की व्याख्या भी एक-दूसरे से मिलती-जुलती है। मार्शल के अनुसार संतुलन की स्थिति वह होती है, जहाँ प्रत्येक वस्तु की सीमांत उपयोगिता उनकी कीमत के बराबर हो। प्रो० हिक्स के अनुसार, संतुलन की स्थिति वह होती है, जहाँ दो वस्तुओं x तथा y की सीमांत प्रतिस्थापन दर उनकी कीमतों के बराबर हो। इन दोनों बातों में बहुत मौलिक अन्तर नहीं है।

(3) दोनों ही विश्लेषण घटती हुई सीमांत उपयोगिता की मान्यता पर आधारित है। मार्शल ने इसके लिए सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम को प्रस्तुत किया और तटस्थता वक्र विश्लेषण "उदासीनता रेखायें मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर (Convex) होती हैं" द्वारा इस बात को प्रस्तुत करता है।